* R E - 3 0 9 8 - 9 9 / 2 0 0 *

RE-3098-99

M. A. (Part - I & II) Examination

April/May – 2010

Hindi : Paper - I

(छायावाद)

Time : Hours] [Total Marks :

RE-3098

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. (Part - 1 & 2)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi - 1**

☛ Subject Code No. : **3 0 9 8** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **1**

Seat No. :

Student's Signature

(२) दोनों विभागों के उत्तर अलग–अलग उत्तर पुस्तिकाओं में लिखिये ।

(३) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

१ ''आँसू' छायावादी युग का सर्वश्रेष्ठ गीति काव्य है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

१ '' 'राग–विराग' संग्रह 'निराला' के सुदीर्घ कवि जीवन की सार्थकता का प्रमाण हैं। – चर्चा कीजिए।

२ पठित कविताओं के आधार पर पंत के प्रकृति–प्रेम को चित्रित कीजिए।

अथवा

२ रामकुमार वर्मा रचित 'एकलव्य' के भावपक्ष और कलापक्ष पर प्रकाश डालिए।

३ महादेवी वर्मा की संवेदनाओं को, 'निहार' को केन्द्र में रखकर चरितार्थ कीजिए।

अथवा

३ राष्ट्रवाद के सशक्त पक्षधर और राष्ट्रप्रेम के अग्रणी कवि के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी का मूल्यांकन कीजिए।

RE-3099

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. (Part - 1 & 2)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi - 1**

☛ Subject Code No. : **3 0 9 9** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **2**

Seat No. :

Student's Signature

(२) दोनों विभागों के उत्तर अलग अलग उत्तर पुस्तिकाओं में लिखिये ।

(३) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

४ निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए ।

(१) 'आँसू' का हृदय पक्ष।

अथवा

(१) 'राग–विराग' शीर्षक की सार्थकता।

(२) 'शिशु' कविता का केन्द्रीय भाव।

अथवा

(२) 'एकलव्य' का काव्य–संदेश।

(३) 'निहार' की दार्शनिक तन्मयता।

अथवा

(३) 'मील का पत्थर' कविता का भाव – सौन्दर्य।

५ निम्नलिखित पद्यांशों की संसदर्भ व्याख्या कीजिए ।

(अ) ''शीतल ज्वाला जलती हैं
ईंधन होता दृग जल का
यह व्यर्थ साँस चल–चलकर
करती काम अनिल का।''

अथवा

(अ) ''खुले केश अशेब शोभा भर रहे,
पृष्ठ–ग्रीवा–बाहु–उपर पर तर रहे,
बादलों में घिर अपर दिनकर रहे,
ज्योति की तन्वी, तड़ित
द्युति ने क्षमा माँगी।''

(ब) ''घने लहरे रेशम के बाल–
धरा हैं सिर में मैंने, देवि!
तुम्हारा यह स्वर्गिक शृंगार,
स्वर्ण का सुरभित–भार।''

अथवा

(ब) ''चिन्ता है मुझको यह केवल।
बिना लाल के कब तक सूना,
पड़ा रहेगा अंचल।
खाने का फल–मूल और
पीने का निर्झर का जल!
शय्या पर कुश–काश और
तन पर जर्जर–सा वलकल।''

(क) ''दैव सा निष्ठुर, दुख–सा मूकं
स्वप्न सा, छाया सा अनजान
वेदना सा, तम–सा गंभीर
कहाँ से आया वह आहगन?
हमारी हसती चाह समेट
ले गया कौन तुम्हें किस देश?''

अथवा

(क) ''क्या हुई बावली?
अर्ध रात्रि को चीखी
कोकिल बोलो तो!
किस दावानल की
ज्वालाएँ हैं दीखी?
कोकिल बोलो तो!''